देवगढ़

ललितपुर

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण

झांसी मण्डल, झांसी

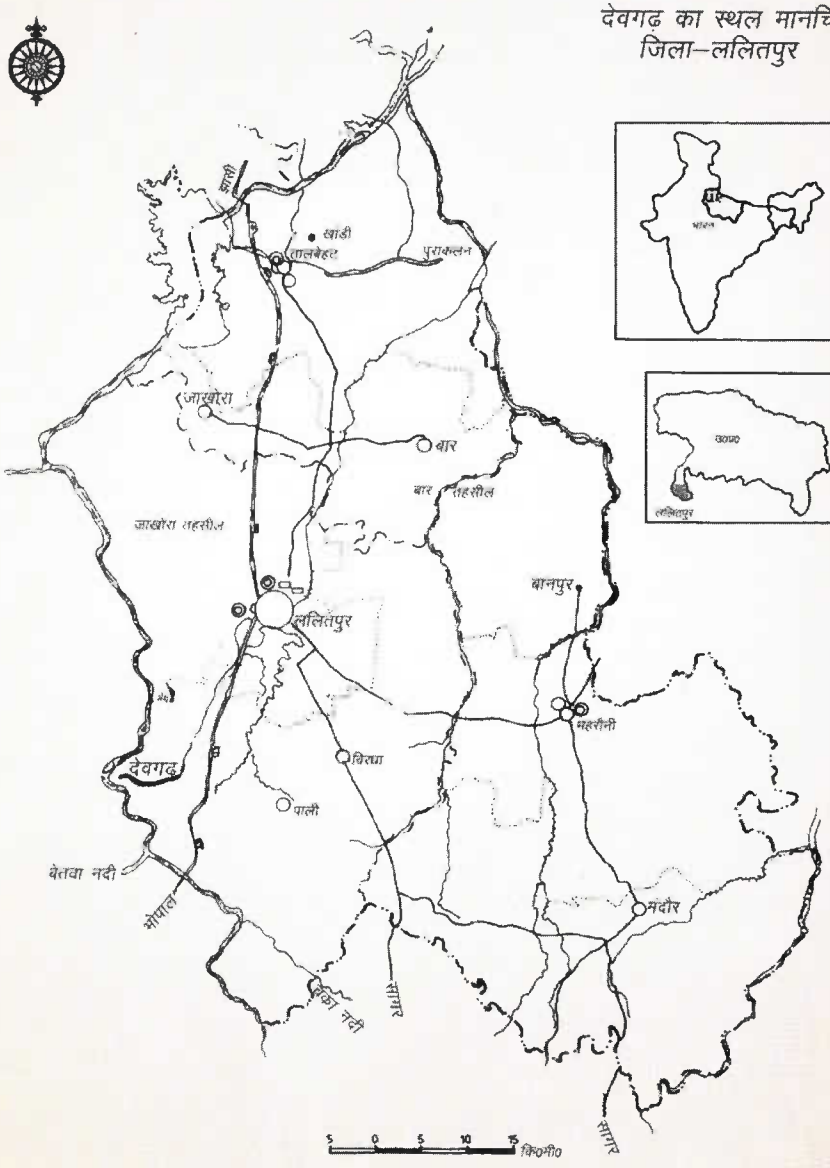

देवगढ़ का स्थल मानचित्र
जिला–ललितपुर

देवगढ़

देवगढ़ (24° 32' उत्तरी अक्षांश और 78° 15' पूर्वी देशान्तर) उत्तर–प्रदेश के ललितपुर जनपद में बेतवा नदी के दाएं तट पर अवस्थित है। यह ललितपुर मुख्यालय से 33 किमी0 ग्वालियर से 235 किमी0 तथा झांसी से 125 किमी0 की दूरी पर स्थित है। देवगढ़ से निकटतम रेलवे स्टेशन जाखलौन 12 किमी0 की दूरी पर है। परन्तु मुख्य स्टेशन ललितपुर है जहाँ पर ज्यादातर ट्रेनों का ठहराव है। पर्यटकों के ठहरने हेतु यहां पर एक सुव्यवस्थित जैन धर्मशाला एवं उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग का अतिथि गृह उपलब्ध है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में अवस्थित देवगढ़ उत्तर–भारत से दक्कन के मार्ग में एक प्रमुख सैनिक एवं व्यावसायिक केन्द्र के रूप में स्थापित था और इस प्रकार इन क्षेत्रों की व्यापक संस्कृतियों का समन्वय केन्द्र था। प्राचीन काल में देवगढ़ के जहाँ उत्तर भारत में पवाया से राजकीय सम्बन्ध थे, वहीं दक्षिण में एरण, भिलसा, उदयगिरी तथा सांची, पश्चिम में उज्जैन एवं बाघ तथा उत्तर–पश्चिम में प्रयाग तथा वाराणसी और पाटलिपुत्र से भी सम्बन्ध थे।

अपने हिन्दू एवं जैन मंदिरों तथा मूर्तियों के कारण विख्यात देवगढ़ उत्तर–भारत का एक प्रमुख कला–केन्द्र था, जो आरम्भिक मध्य–काल के अपने निकटवर्ती मन्दिर स्थलों यथा–दुधई, चांदपुर इत्यादि से पर्याप्त समन्वय प्रदर्शित करता है।

यद्यपि देवगढ़ क्षेत्र से पाषाणकालीन उपकरण भी प्राप्त हुए हैं तथापि नाहरघाटी से प्राप्त अभिलेख के आधार पर देवगढ़ का क्रमिक इतिहास गुप्तकाल से माना जा सकता है।

9वीं शती ई0 में देवगढ़ गुर्जर प्रतिहारों के शासन के अन्तर्गत था। इस सन्दर्भ में 862 ई0 के शांतिनाथ मंदिर में उत्कीर्ण एक अभिलेख से ज्ञात होता है कि यह स्थान विष्णुदेव के द्वारा शासित था, जो पहले भोजदेव का सामन्त था। 1097 ई0 के वत्सराज के अभिलेख से ज्ञात होता है कि 11वीं शताब्दी ई0 में देवगढ़ चन्देलों के शासन के अन्तर्गत था। चन्देलों के पश्चात् देवगढ़ क्रमशः मुगलों, मराठों और अंग्रेजों के अधिकार में रहा।

दशावतार मंदिर गुप्तकालीन कला का अनुपम उदाहरण है।

दशावतार मन्दिर प्रवेशद्वार

यह लाल बलुआ पत्थर से एक चौकोर आकार की ऊँची जगती पर निर्मित है। 16.95 मी0 वर्गाकार अधिष्ठान के मध्य में 5.64 मी0 वर्गाकार गर्भगृह निर्मित है। इस तक पहुँचने के लिए चारों ओर सात सीढ़ियों से युक्त चार सोपान निर्मित है। पंचायतन शैली में निर्मित यह मंदिर विकसित गुप्तकालीन मन्दिरों की शैली का सर्वोत्तम उदाहरण हैं। पश्चिमाभिमुख मन्दिर का प्रवेशद्वार विविध प्रकार के कला पूर्ण अलंकरणों से पूर्णतः सुसज्जित है। मन्दिर के गर्भगृह के प्रवेशद्वार की चौखट का आकार 3.42 मी0 × 3.32 मी0 है और इसकी तीनों दिशाओं की वाह्य दीवारों पर विशाल रथिका–बिम्बों में अद्‌भुत प्रतिमाएं उत्कीर्ण की गई हैं। वर्तमान में मन्दिर का शिखर नष्ट हो गया है एवं वर्गाकार गर्भगृह में प्रमुख देवता की प्रतिमा भी नहीं है। मन्दिर के अधिष्ठान पर मूर्ति–फलकों के माध्यम से कई आख्यान प्रदर्शित किये गए हैं, जिनमें रामायण के आख्यान, कृष्ण–जन्म, नन्द–यशोदा, बलदेव, मिथुन–आकृतियां, आदि के दृश्य उल्लेखनीय हैं। मन्दिर के चारों कोनों में एक लघु–मन्दिर के अवशेष दृष्टव्य हैं।

मंदिर के पंचशाखा प्रवेश–द्वार की चौखट पर मिथुन–प्रतिमाएं, पत्रलताएं, मकर, कुम्भ एवं श्रीवृक्ष की माला, आदि अंकित हैं, जिनमें विविधता व कलात्मकता का श्रेष्ठ प्रदर्शन किया गया है। द्वार के नीचे के भाग में स्थानक विष्णु, द्वारपाल और यक्षी की मूर्तियां प्रदर्शित हैं जबकि ऊपर के भाग में मकरवाहिनी गंगा और कुर्मवाहिनी यमुना का अत्यन्त सुन्दर अंकन किया गया है।

ललाट–बिम्ब पर शेषशायी विष्णु की प्रतिमा उत्कीर्ण है। मंदिर की पश्चिम दिशा में प्रस्तर निर्मित बावली स्थित है। मन्दिर की

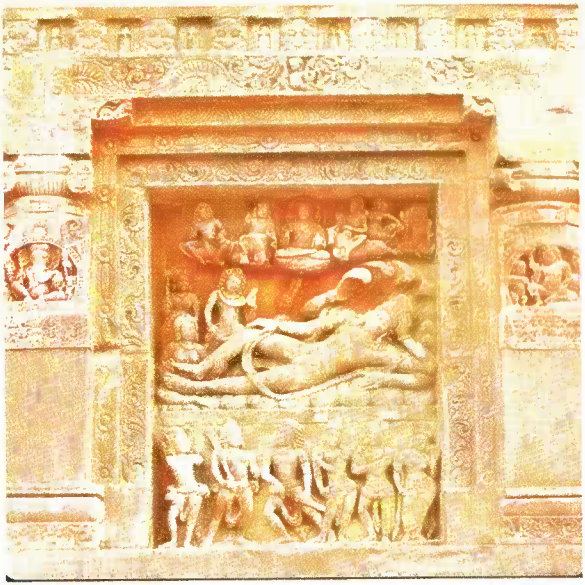

शेषशायी विष्णु

देवकुलिकाएं इस मंदिर की शोभा कई गुना बढ़ा देती हैं। उत्तरी देवकुलिका में गजेन्द्र–मोक्ष की कथा का अंकन है। इस कथा में पानी पीने आया हाथी नाग द्वारा पकड़ लिये जाने पर चीत्कार कर रहा है। अपने भक्त द्वारा इस तरह स्मरण करने पर उसे मुक्त कराने हेतु गरुड़ पर आरुढ़ होकर विष्णु जी पधारे। विष्णु जी इतने शीघ्रता से आये कि अपना मुकुट ले जाना भूल गए जिसे लेकर विद्याधर युगल उड़ते हुए आ रहे हैं। नाग राजा तथा रानी हाथ जोड़कर विष्णु से क्षमा याचना कर रहे हैं। पूर्वी देवकुलिका में नर–नारायण का अंकन किया गया है। दोनों बदरिकाश्रम में पृथक–पृथक शिलाखण्डों पर बैठे हुए हैं। दाईं ओर स्थित नारायण अपने ज्ञान का प्रकाश नर रूपी अवतार को दे रहे हैं। हिरन और शेर को एक साथ दिखलाकर तपोवन का आभास किया गया है। मन्दिर की दक्षिणी देवकुलिका में शेषशायी विष्णु शेषनाग के

गजेन्द्र-मोक्ष

नर-नारायण

शिशु के लिए हुए नर-नारी

सहस्त्र फणों की छाया में लेटे हुए हैं। लक्ष्मी जी विष्णु जी का पैर दबा रही हैं। ऊपर ब्रह्मा जी विकसित कमल पर विराजमान हैं। फलक में दाहिनी ओर इन्द्र, वरुण और कार्तिकेय दृष्टव्य हैं। अनन्तशायी के नीचे की ओर छः मानव आकृतियां दृष्टव्य हैं, जिनमें पांच पुरुष और एक महिला पंक्ति में खड़े हैं जिनका अभिज्ञान विष्णु के आयुध–पुरुषों तथा मधु–कैटभ से किया गया है। अन्य प्राचीन मंदिरों के अवशेष तथा वास्तुखण्ड मुख्य मंदिर के चारो ओर दृष्टिगोचर होते है। जो दर्शाते हैं कि इस परिसर में अनेक मंदिरों का समावेश रहा होगा।

वराह मन्दिर

वराह मन्दिर

देवगढ़ दुर्ग के दक्षिण–पश्चिमी कोने पर लाल बलुए प्रस्तर से निर्मित विशाल मन्दिर अवस्थित हैं जो वर्तमान में क्षतिग्रस्त हो चुका है। मन्दिर ऊँचे अधिष्ठान पर निर्मित है जिसकी ऊँचाई सतह से लगभग 2.16 मी0 है। मन्दिर का प्रवेशद्वार अपेक्षाकृत छोटा है, वराह मन्दिर के गर्भगृह की दीवारों में संवत् 1550 ई0 के दो अभिलेख

नागरी लिपि में उत्कीर्ण हैं। इस मन्दिर की तिथि लगभग 7वीं शती ई0 है। नृसिंह–वराह की प्रतिमा देवगढ़ मूर्ति–शाला में सुरक्षित है।

जैन मन्दिर

जैनों के पावन तीर्थ स्थल के रूप में विद्यमान देवगढ़ में जैन मन्दिरों के निर्माण का श्रेय क्रमशः प्रतिहार, चन्देल और कलचुरि राजाओं को जाता है। यहाँ पर 32 छोटे–बड़े जैन मन्दिरों का समूह है जो देवगढ़ दुर्ग की दक्षिणी दीवार से सटी हुई लगभग 300 मीटर ऊँची पहाड़ी पर स्थित है। ये सभी मन्दिर 24 तीर्थकरों को समर्पित हैं और नागर शैली में निर्मित हैं तथा भिन्न–भिन्न कालों, 8–9वीं0 शती0 ई0 से 16–17 वीं0 शती0 ई0, में बनवाए गए। मन्दिर संख्या–12 को शान्तिनाथ मन्दिर के नाम से जाना जाता है। मन्दिर के गर्भगृह में शान्तिनाथ की भव्य आकर्षक प्रतिमा है। मन्दिर की दीवारों और स्तम्भ पर अभिलेख उत्कीर्ण हैं जिनसे यह ज्ञात होता है कि 862 ई0 से 1638 ई0 के मध्य इस मंदिर का निर्माण विभिन्न कालों में हुआ है। सान्धार प्रकार के इस मन्दिर की तल–योजना के प्रमुख भागों में प्रदक्षिणापथ से युक्त गर्भगृह, अन्तराल, महामण्डप तथा अर्द्धमण्डप हैं। महामण्डप तथा अर्द्धमण्डप का निर्माण संभवतः 12वीं–13वीं शती0 ई0 में किया गया था।

विशाल जैन मन्दिर

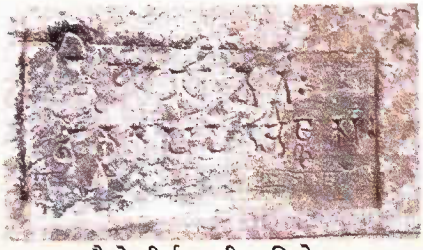

शैलोत्कीर्ण ब्राह्मी अभिलेख

घाटियां

मन्दिर एवं मूर्तियों के अतिरिक्त देवगढ़ में चट्टानों को काटकर बनाई गई दो घाटियां नाहर घाटी और राजघाटी अत्यन्त

नाहर घाटी

प्रसिद्ध हैं। ये घाटियाँ बेतवा नदी तट के दक्षिण में स्थित हैं। नाहर घाटी में एक देवकुलिका, एक सप्तमातृका पट्ट और गुप्तकालीन ब्राह्मी में संस्कृत अभिलेख उत्कीर्ण हैं जिनमें चन्देरी के बुन्देल राजाओं का उल्लेख किया गया है। यह अभिलेख 1732 ई0 में उत्कीर्ण कराया गया था। राजघाटी में एक शैलोत्खनित गुफा है। इसके प्रवेश द्वार के बायीं ओर दो अभिलेख जिनकी तिथि क्रमशः 1064 ई0 और 1492 ई0 है, उत्कीर्ण हैं। इसके अतिरिक्त एक अन्य अभिलेख जिसकी तिथि 1097 ई0 है चन्देल शासक कीर्तिवर्मन के मन्त्री वत्सराज के द्वारा उत्कीर्ण कराया गया था।

राजघाटी के निकट ही एक अन्य घाटी सिद्ध की गुफा स्थित है। इस गुफा में अनेक अभिलेख उत्कीर्ण हैं, जिनकी तिथि 1285 ई0 से 1751 ई0 का एक गुप्तकालीन अभिलेख सूर्यवंशी स्वामी भट्ट के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान करता है।

कुरैयावीर मंदिर, कुचदौं

कुरैयबीर मंदिर कुचदौं देवगढ़ से तीन किमी की दूरी पर उत्तर पूर्व दिशा में स्थित है। मंदिर पंचायतन भू–विन्यास पर आधारित है जिसका गर्भगृह वर्गाकार है। इसका अधिष्ठान अत्यंत विकसित है। खुर, कुंभ, कलश, कपोतिका एवं एक पट्टिका है जो कि पत्रलताओं, कीर्तिमुख, पक्षियों एवं मकरमुख तथा अन्य पशु–पक्षियों से

कुरैयावीर मंदिर

सुसज्जित है। अधिष्ठान के ऊपर भद्र–रथिका के नीचे एक पट्टिका का प्रयोजन किया गया है जो विविध अभिप्रायों, यथा–कीर्तिमुख, किन्नर–मिथुन आदि से सुसज्जित है और उत्तर दिशा में वारि–मार्ग है।

मंदिर की जंघा स्तंभ–एवं–पट्ट विधि से बनाया गया है जिस पर लतिना–शिखर अवस्थित है। जंघा में तीन ओर गहरी भद्र–रथिका घटपल्लव अभिप्रायों से सज्जित अर्ध–स्तंभों से घिरी हैं। केवल पश्चिमी भद्र रथिका में कार्तिकेय की प्रतिमा अब सुरक्षित है। दो भुजाओं वाले कार्तिकेय अपने वाहन मयूर पर आसनस्थ हैं जिसके पीछे तक फैले हुए पंख उनकी प्रभावली का भी कार्य करते हैं। बाएं हाथ, जो कि क्षतिग्रस्त हैं, में कार्तिकेय ने शक्ति (भाला) ले रखा है और दाएं हाथ से अपने वाहन को चुगा रहे हैं।

वरण्डिका में दो सोपान हैं, जिसमें से निचला सोपान पद्म–पत्र से सुसज्जित है। गर्भगृह के ऊपर तीन–तलीय लतिना शिखर है। जो वातायनों एवं सामने सुकनासिका से युक्त चौकोर कक्ष के ऊपर है।

मुख मण्डप सीधे गर्भगृह में खुलता है। अन्तराल की व्यवस्था नहीं है। उत्तर–दक्षिण की लम्बाई वाले आयताकार मुखमण्डप दो सामने दो स्तभें एवं पीछे के दो अर्ध–स्तंभों पर आधारित है। सामने के अष्टकोणीय स्तंभ कुंभिका पर आधारित हैं और घट–पल्लव एवं जंजीर तथा घण्टिका अभिप्रायों से सुसज्जित है।

द्वार की उददम्बर का मध्य भाग सपाट और बाद का है जबकि दो ओर क्षतिग्रस्त सिंहाकृतियां हैं। द्वार–शाखाओं पर बायीं एवं दायी ओर क्रमशः गंगा एवं यमुना का अंकन किया गया है जिन्हें छत्रधारिणी सेविकाओं एवं बाहर की ओर अलौकिक द्वारपालों द्वारा घिरा हुआ दिखाया गया है। नदी देवियों के ऊपर पंचशाखाएं यथा; पत्र–शाखा, नाग–शाखा, प्रमथ–शाखा, स्तंभ–शाखा एवं वाह्य–शाखा हैं, जो कि अर्ध–दैवीय आकृतियों से अंलकृत है। ललाट–बिम्ब पर उड़ते हुए गरूड़ को प्रदर्शित किया गया है। जिन्होंने नाग–शाखा को दोनों हाथों से पकड़ रखा है। गरूड़ के दोनों ओर तीन–तीन हार लिए विद्याधर हैं। अन्य शाखाएं भी पत्र–लताओं एवं कीर्ति–मुख से सज्जित हैं।

गर्भगृह की सपाट छत चारो कोनो पर स्थित चार स्तंभों पर आधारित है। मध्य में जलाधारी है जिसके उत्तर की ओर भद्र में खुलते वारि–मार्ग की व्यवस्था है। शैली के आधार पर मंदिर को आठवीं शताब्दी के मध्य से नवीं शताब्दी तक का माना जाता है।

अन्य मंदिर

दशावतार मन्दिर के अतिरिक्त देवगढ़ में शिव, हनुमान, दुर्गा मन्दिर, आदि स्थित हैं। यद्यपि इन मन्दिरों के शिखर आधुनिक हैं, तथापि इनमें स्थापित प्रतिमाएँ इनकी प्राचीनता का प्रमाण हैं। ऐसे ही एक शिव मन्दिर में चतुर्मुख शिवलिंग स्थापित है। इसके अतिरिक्त शिव मन्दिर के निकट दो हनुमान मन्दिर स्थित हैं, जिनमें से एक मन्दिर की मुख्य मूर्ति का मुख मानव का है।

मूर्तिशाला

दशावतार मन्दिर के परिसर में ही भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के द्वारा मूर्तिशाला का निर्माण कराया गया है, जिसमें अनेक प्रतिमाएं तथा वास्तु–खण्ड प्रदर्शित किये गये हैं जो दशावतार मन्दिर देवगढ़, दुधाई तथा चांदपुर के ब्राह्मण और जैन मन्दिरों से सम्बन्धित हैं। ये प्रतिमाएं छठी शती ई0 से 11वीं और 12वीं शती ई0 के मध्य की हैं।

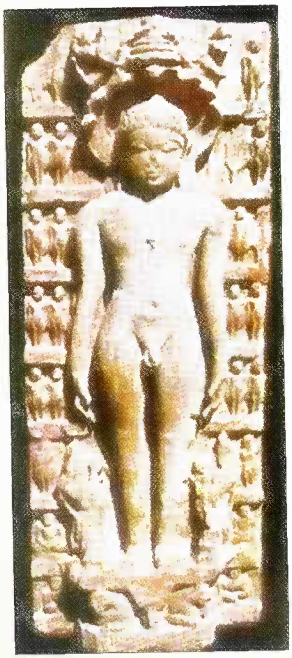

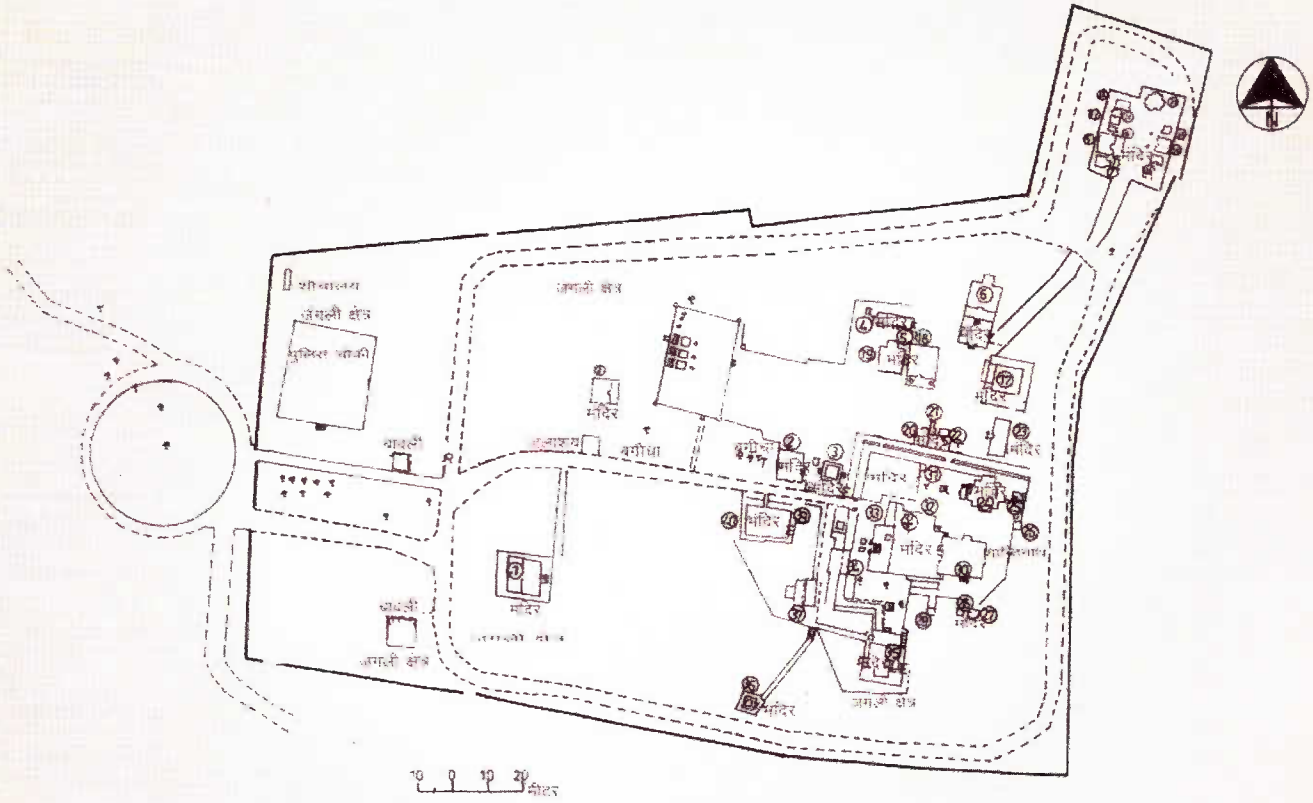
N
मंदिर
जगती क्षेत्र
मीटर

सांस्कृतिक विरासत की रक्षा हेतु हमारा कर्त्तव्य

क्या करें ?

- स्मारक को साफ–सुथरा रखने में सहयोग दें।
- स्मारक के प्राकृतिक सौन्दर्य को बनाए रखने में सहयोग दें।
- स्मारक की गरिमा को बनाए रखें।
- स्मारक में उत्कीर्ण चित्रण, मूर्तियों आदि को दूर से देखें।
- असंरक्षित स्मारकों व यत्र–तत्र बिखरी कलाकृतियों की सुरक्षा सुनिश्चित करें।

क्या न करें।

- चित्रण व अन्य कलाकृतियों को न छुएं तथा उन पर जल, तीव्र प्रकाश व अन्य पूजा सामग्री का प्रयोग न करें।
- अपनी विरासत को महत्वहीन समझते हुए उपेक्षित न होने दें।
- अपने आचरण से ऐसा कोई कृत्य न करें जिससे स्मारक की भव्यता तथा सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक सौन्दर्य बोध पर नकारात्मक प्रभाव पड़े।

प्राचीन स्मारक एवं पुरातत्त्वीय स्थल और अवशेष (संशोधन एवं विधिमान्यकरण) अधिनियम, 2010 के अनुसार

संरक्षित क्षेत्र – राष्ट्रीय महत्व का पुरातात्त्विक क्षेत्र

प्रतिषिद्ध क्षेत्र – निर्माण गतिविधि वर्जित

विनियमित क्षेत्र –राष्ट्रीय स्मारक प्राधिकरण से अनुमति के पश्चात ही निर्माण गतिविधि अनुमन्य

प्रकाशक :

अधीक्षण पुरातत्त्वविद्

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, झांसी मण्डल

36, रानी लक्ष्मीबाई महल, मानिक चौक, झाँसी– 284002

ई मेल : circlejhansi.asi@gmail.com,
circle.jhansi-asi@gov.in

Tel No. : 0510-2442325

सत्यमेव जयते

प्रत्नकीर्तिमपावृणु

आलेख संयोजन : डा० शमऊन अहमद, सचिन कुशवाहा, आशुतोष जायसवाल

डिजाइन : मो० उवैस

2021